शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 315-320

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

डॉ. श्यामलाल उदेनिया
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
एस.आर.के.पी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किशनगढ़.

Corresponding Author :
डॉ. श्यामलाल उदेनिया
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
एस.आर.के.पी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किशनगढ़.

राजस्थान का संस्कृत लघु कथा साहित्य के विकास में अवदान

प्रस्तावना : राजस्थान के संस्कृत कथाकारों ने जीवन के विभिन्न पक्षों को उठाते हुए उसे अपनी कथा की विषयवस्तु बनाया है। संस्कृत कथा में पारम्परिक कथा के प्रतिपाद्य का स्थान नवयुगीन चेतना ने ले लिया। पश्चिमी कथा साहित्य, बांग्ला कथा साहित्य और हिन्दी कथा साहित्य के आधुनिक संरचनागत परिवर्तनों के ग्रहण से संस्कृत कथा साहित्य को नवीन रूप मिला है। राजस्थान आजादी से पूर्व व पश्चात् कई उतार-चढ़ाव से होकर गुजरा है। राजस्थान में राजतन्त्र रहा है। मुगलों, अंग्रेजों और राजाओं के आपसी युद्धों से यहाँ की जनता भी प्रभावित हुई। अंग्रेजों की क्रूरता और सामन्तवाद से जूझते हुए राजस्थान नवीन परिवर्तनों से होकर भी गुजर रहा था। यह परिवर्तन वैचारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर हो रहे थे। अपनी वाणी को लोगों तक पहुँचाने के लिए गद्य को चुना गया उसमें भी कथा को प्रमुखता मिली। कथा अपनी बात को कम शब्दों में सार्थक रूप से अभिव्यक्त करने का माध्यम बनी। राजस्थान के संस्कृत कथाकारों की कथाएँ संस्कृत साहित्य की अमूल्य धरोहर और आने वाली पीढ़ियों के लिए पथ-प्रदर्शक बन गयी।

बीज शब्द : सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक, परम्पराभुक्त कम, परम्परामुक्त अधिक, यथार्थवादी, प्रगतिशील, सृजनात्मकता।

कथा मानव जीवन को विभिन्न स्वरूपों में प्रस्तुत करने वाला माध्यम है। कथा के माध्यम से विविध विषयों पर दृष्टिपात होता है। कथा मनुष्य जीवन का राग है। कथा की एक परम्परा रही है जो प्रत्येक युग में कुछ बदलावों के साथ निरन्तर प्राणवान बनी रही है। कथा मनुष्य जीवन को नवीन अनुभवों का ज्ञान प्रसारित करने का सुगम माध्यम है। "कथा संस्कृति पर बात करते हुए भाषा और उसकी उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि कहानियों ने हमेशा आम आदमी, अपने समय के सर्व-साधारण व्यक्ति की भावनाओं और उद्भावनाओं को ही वाणी दी है। कहानी लगातार एक समसामयिक, समकालीन, सर्वसाधारण की अभिव्यक्ति का ही स्वर रही है। इसीलिए किसी भी दौर, जाति या समाज के सामान्य मनुष्य के जीवनगत-

समाजगत सत्य को उस दौर की कहानियों के बिना नहीं समझा जा सकता। हर सदी के आम आदमी का इतिहास कहानियों में तलाशा जा सकता है। परन्तु भारत में साहित्य की एक कुलीन परम्परा हमेशा मौजूद रही है, जो जनसाधारण की रचना, विधा और उसकी भाषा को कुलीनता के अहंकार में नकारती रही है।"[1]

राजस्थान की संस्कृत कथाओं में परम्परा का प्रभाव भले ही हो परन्तु समयानुसार प्रवृत्तियों का समावेश भी मिलता है। आधुनिक संस्कृत कथा का स्वरूप पहले की अपेक्षा अधिक यथार्थवादी रूप में वर्णित हुआ है। "अनवरत चिन्तन एवं लेखन की इस परम्परा में विराम कहाँ ? यह तो भावों की ऐसी भागीरथी है जो कहीं तो समाज से जुड़े कटु सत्यों को स्वर देती है और कहीं अनुत्तरित प्रश्न छोड़कर मौन हो जाती है। समाज में व्याप्त व्यथाऐं ही कवि की कल्पनाओं में प्रश्रय पाकर कथाओं का आकार ले लेती है अतः जीवन के प्रत्येक पक्ष को हमारे आधुनिक कथाकारों ने जीवन्त किया है। उनकी कथायें सामन्ती व्यवस्था से हटकर समाज के प्रत्येक वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। उनके पात्र कल्पनाओं में नहीं जीते अपितु यथार्थ के कठोर धरातल पर जूझते हैं, अन्धविश्वासों में श्वास लेते हैं और वर्गभेद के सत्रांस को भोगते हैं। वास्तव में कथाकारों ने सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, राजनैतिक एवं धार्मिक इन विविध पक्षों को अपनी तूलिका से संवारा है। जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जिसने उनकी कथाओं में स्थान न पाया हो।"[6]

आधुनिकता के कारण अगर नवीन मूल्यों का सृजन हुआ है तो पुराने मूल्यों का ह्रास भी हुआ है। शिक्षा, रोजगार व उज्जवल भविष्य की कामना की आकांक्षा में गाँव से शहरों की ओर पलायन हुआ जिससे संयुक्त परिवार का विघटन हुआ व एकल परिवार अस्तित्व में आये। संयुक्त परिवार के विघटन ने संस्कृति को भी प्रभावित किया है। कई रस्मों-रिवाज जो घर के बुजुर्गों के कारण अस्तित्व पाये हुए थे एकल परिवार में उनका चलन कम होता गया। यह संस्कृति के बिखराव को दिखाता है। 20वीं व 21वीं शताब्दी के संस्कृत कथाकारों ने आधुनिक समय, समाज, परिवर्तन, एवं विकास की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए कथा की रचना की है।

राजस्थान के संस्कृत कथाकारों पर सृजनात्मकता का दबाव रहा है। मनुष्य के जीवन, उसके ज्ञात-अज्ञात परिवेश, प्रसंगों, अनुभवों एवं विचारों के ऐसे कई पक्षों के सृजन की उदात्तता तक पहुँचना पड़ता है। इस कथा साहित्य की यात्रा अत्यन्त जटिल है। राजस्थान की संस्कृत कथा सिर्फ वस्तु या कला की दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि इसमें इतिहास, सामाजिक विमर्श, विचारधारा की टकराहट, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि ऐसी अनेक बातें दिखाई देती हैं जिसे पारम्परिक तरीके से समझना थोड़ा जटिल है। इन्हें समझने के लिए परम्परा, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, धर्मशास्त्र, मनोविज्ञान आदि की समझ के साथ-साथ मानवीय प्रवृत्तियों एवं मानव-स्वभाव के सर्जनात्मक पक्ष की समझ होना भी जरूरी है। इसका प्रमुख कारण कथा की विविधताएँ हैं। विज्ञान, टेक्नोलॉजी, सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण ऐसी कई प्रक्रियाएँ होती हैं जो आधुनिक संस्कृत कथाकार को दिखाई देती है।

राजस्थान के संस्कृत कथाकारों में भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का प्रमुख स्थान है। वह राजस्थान की संस्कृत कथा परम्परा के प्रमुख स्तम्भ माने जाते हैं। इन्होंने विभिन्न विषयों पर अपनी लेखन कला चलाई है। इन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, हास्य-प्रधान, नैतिकता प्रधान, प्रेम-सम्बन्धी, मनोवैज्ञानिक एवं प्रतीकात्मक कथाएँ लिखी हैं। ऐतिहासिक पात्रों को आधार बनाकर शिक्षाप्रद नैतिक साहचर्य युद्ध वैमनस्य के ताने-बाने से कथानक को रचा है। भट्ट जी ने सामाजिक कथाओं में अनमेल विवाह की परिणति 'एकवारं दर्शनम्' कथा के माध्यम से दिखाई है। पर्दा प्रथा एवं उससे उत्पन्न गम्भीर परिणामों को 'दयनीया' कथा में देखा जा सकता है। 'अनादृता' में बिना माँ-बाप की कन्या ताई के अत्याचार से बचने के लिए घर से बाहर शरण की आशा में निकलती है परन्तु घर के बाहर मानवीय राक्षक उसे नोंच डालते हैं जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। 'सरला' व 'निराशः प्रणयः' कथा स्त्री की अबला छवि को दिखाती है। इन्होंने सामाजिक समस्याओं को आधुनिक परिवेश, परम्परा, रुढ़िगत रीति-रिवाज, जाति-धर्म के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है। इनकी हास्यप्रधान और व्यङ्ग्यपरक कथाओं के माध्यम से मनोविज्ञान को

प्रमुख स्थान मिला है। ये कथाएँ कला दृष्टि से मस्तिष्की दबाव बनाती हैं, सोचने पर विवश करती हैं। शुद्ध हास्य की अभिव्यक्ति में भट्ट जी अग्रणी रहे। इनमें 'शिष्या' और 'चपण्डुकः' कथाएँ प्रमुख हैं। स्वस्थ हास्य व व्यङ्ग्यपरक कथाएँ पाठक वर्ग को कथा संसार में विचरण करने के लिए प्रेरित करती है। प्रेम-सम्बन्धी कथा परम्परा में कादम्बरी, 'अवन्तिसुन्दरी' व 'वासवदत्ता' की कथा को छोड़ इन्होंने यथार्थ के धरातल से नायक-नायिका का चयन किया है जिन्हें किसी प्रकार की देवीय शक्ति प्राप्त नहीं है जिसके आधार पर वह प्रेमरूपी समुन्द्र से पार उतर जाये। ये आधुनिक जीवन से, मानवीय रिश्तों से हिचकोले खाती प्रेम की कथाएँ हैं। भट्टजी ने सामाजिक क्रूरता, कुव्यवस्था तथा समाज में व्याप्त बुराईयों पर बारीकी से लिखा है। "भट्टजी ने अपनी इन कहानियों में समाज के रूढ़िग्रस्त रीति-रिवाज, जाति, धर्म और परम्परा को अपनी कला का विषय बनाया है, क्योंकि मूलतः समाज की यही वे ऊँची दीवारें हैं, जिनमें मानवता कहीं अछूत के नाम से बहिष्कृत है, कहीं अधिक दासता के नाम पर बन्दी है और वेश्या तथा पतिता के नाम से अग्राह्य हैं, कहीं पति की उच्छृंखलता से दाम्पत्य जीवन में कलह की लपट उठी है, कहीं नारी ने अपने आत्मसम्मान की रक्षा और उत्सर्ग में अपनी बलि दे दी है।"[2]

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री की शैली यथार्थवादी अधिक रही है। अपने पात्रों की मनोवैज्ञानिक पड़ताल कर स्थिति या समस्या से रु-ब-रु करवाते हैं। इन्होंने आदर्शवादी शैली का पूर्णतया परित्याग नहीं किया है तो आदर्शवाद को पूर्णतः धारण भी नहीं किया है। संवाद अधिक बड़े-बड़े नहीं होने से कथानक ग्रहण में बाधा उत्पन्न नहीं होती है। राधावल्लभ त्रिपाठी लिखते हैं, कि "भट्ट मथुरानाथ शास्त्री युग प्रवर्तक साहित्यकार हैं जिनकी रचनाओं में नई प्रवृत्तियों के आधान, नई विधाओं के सूत्रपात तथा नई शैलियों का प्रयोग है, जिससे उनका कृतित्व अति समृद्ध है।"[3]

कथा लेखन के क्षेत्र में भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के बाद के कथाकारों में गणेशराम शर्मा एक सशक्त हस्ताक्षर है। "वस्तुतः भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के बाद सर्वाधिक कहानियाँ पं. गणेशराम शर्मा ने ही लिखी हैं। इनकी कहानियों में प्रेम, हास्य, करुण, वीर एवं ऐतिहासिकता आदि विभिन्न विषयों का समाश्रयण परिलक्षित है।"[4] कथाकार ने समाज की करुण व्यथा को अपनी कथा में स्थान दिया है। इनकी कथाएँ आदर्शवादी रूप में ढली होने के उपरान्त भी हास्य एवं व्यङ्ग्य परक भूमि की सृष्टि करती हैं। इनकी कथाओं में दीर्घ पदावली का प्रयोग भी देखा जाता है। इन्होंने भौतिकवाद एवं पूँजीवाद के कारण बदलते धार्मिक मानदण्डों पर भी अपनी कथाओं के माध्यम से दृष्टि डाली है। ये कथाएँ आधुनिक जीवन की व्यथा को व्यक्त करती हैं। इन कथाओं के विषय में रामदेव साहु लिखते हैं, कि "क्वचिन्महाकवेरस्य समृद्धा अनुभवा उपनिबद्धाः, क्वचिद्भावप्रवणताप्रबलायमाना, क्वचिदभिव्यञ्जनतैक्ष्ण्यं, क्वचिदादर्शोन्मुखता, क्वचिच्च यथार्थवादिता प्रतिभाति। संस्कृतगद्यलेखने प्रगतिशील-विचाराणामभिनवा शैली रचनास्वासु वस्तुतः स्तुत्याऽस्ति।"[5]

गणेशराम शर्मा ने देशकाल में घटित घटनाओं एवं उनसे उपजी समस्याओं पर बेबाकी से लिखा है। आदिवासी क्षेत्र के निवासी होने से इन्होंने आदिवासी जीवन की कठिनाईयों, समस्याओं, अन्धविश्वास, पाखण्डवाद, अशिक्षा, जातिगत भेदभाव आदि पर प्रकाश डाला है। इनकी 'मूढ़चिकित्सा', 'धूर्तपुरोहितः', 'दाम्भिकः', 'भैरवताण्डवम्', 'शठे शाठ्यम्' कथाओं के माध्यम से धार्मिक अन्धता एवं पाखण्डवाद की जंजीरों से जकड़ी आमजन की व्यथा को चित्रित किया गया है। 'संस्कृतपण्डित-स्योत्तराधिकारः' कथा में सामाजिक नज़रिये एवं संस्कृति के प्रति लोगों की उपेक्षा पर तीखा व्यङ्ग्य किया गया है।

नवलकिशोर कांकर द्वारा लिखित कथाओं में केवल पौराणिक आख्यान को आधार ही नहीं बनाया गया है अपितु सामाजिक यथार्थ को भी बखूबी चित्रित किया गया है। इनकी 'असहाया वराकी किशोरी' कथा में स्त्री की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है। विमाता के अत्याचार से पीड़ित नायिका उच्च शिक्षित होने पर भी घर छोड़कर चले जाने को मजबूर होती है। 'भातृस्नेहः' कथा में पारिवारिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस कथा में बदलते मानवीय रिश्तों के पतन को दिखाया गया है तथा पौराणिक आख्यान पर आधारित कथा है 'सुकन्या'।

`गंगाधर भट्ट द्वारा लिखित कथाएँ अपने समय का प्रतिनिधित्व करती है। इनकी कथाएँ स्त्री की पीड़ा

को, उसकी समस्या को वाणी प्रदान करती है। स्त्री जीवन को परम्परागत अवधारणाओं से देखने की दृष्टि से अलग आधुनिक जीवन से उपजी नवीन समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में देखा है। नवीन जीवन शैली से रिश्तों के मानदण्ड भी बदलें हैं जिससे मानवीय सम्बन्ध प्रभावित हुए। परिवार के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने वाली 'वधूरत्नम् अपर्णा' आधुनिक समाज के स्वार्थी होते रिश्तों पर व्यङ्ग्य करती सी प्रतीत होती है। घरेलू हिंसा की यातना में घुटती स्त्री की व्यथा को 'परिवर्तनम्' कथा के माध्यम से व्यक्त किया गया है। 'राष्ट्रविप्लवः' तथा 'द्रौपद्या एवापमानः' कथाओं का कथानक पौराणिक जरूर है लेकिन लेखक ने नवीन मूल्यों का सृजन करते हुए आमजन के माध्यम से कौरवों का नाश करते हुए स्त्री के आत्मसम्मान की रक्षा करते दिखाया है। 'ते के न जानीमहे' कथा में लालची प्रवृत्ति से युक्त होकर मानवीय रिश्तों को तार-तार करते हुए दिखाया गया है। 'वरान्वेषणम्' हास्य-व्यङ्ग्य प्रधान कथा है। 'डाक्टर-कृष्णः' कथा में दलित पात्र को केन्द्र में रख कर नवीन सामाजिक मूल्यों की स्थापना की गई है जो वर्तमान समय में प्रासंगिक है। 'पश्चात्तापः' स्त्री-पुरुष सम्बन्धों पर आधारित कथा है। वहीं 'सौभ्रात्रम्' कथा पारिवारिक ईर्ष्या-द्वेष पर आधारित है।

पुष्करदत्त शर्मा की कथाएँ गाहे-बगाहे पत्र-पत्रिकाओं में छपती रही हैं। इन कथाओं में उल्लेखनीय 'बधिरा' व 'प्रतिवेशिनी' कथाएँ हैं जो कि नवीन भावबोध पर आधारित हैं। 'बधिरा' कथा में 'बधिरा' नामक विधवा स्त्री की कर्मठशीलता का उल्लेख किया गया है जो नगर के एक कोने में रहने वाली दलित वर्ग से आती है। 'प्रतिवेशिनी' कथा मनोविश्लेषणात्मक भावभूमि पर लिखी गई है, जिसमें स्त्री और पुरुष के कामजन्य उद्भावों का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण किया गया है।

नारायण शास्त्री कांकर ने अपनी कथाओं में छोटी सी घटना में सम्पूर्ण जीवन की सार्थकता का अनुभव करवाया है। कथा में बड़ी शक्ति होती है। समाज जिस रूप में ढल रहा है उसे विभिन्न प्रवृत्तियों एवं नवीन मूल्यों के आधार पर समझना आवश्यक है। इनकी कथाओं के विषय-भिन्नता पर विचार करें तो हमें विमाता सम्बन्धित कथाएँ, संस्कृत के प्रचार-प्रसार से सम्बन्धित कथाएँ, देश-प्रेम और सैनिक जीवन से सम्बन्धित कथाएँ, पुनर्विवाह, विधवा-विवाह एवं अन्य सामाजिक समस्या सम्बन्धित कथाएँ, युवक व वृद्ध सम्बन्धित कथाएँ, मृत्यु सम्बन्धित कथाएँ तथा प्रकीर्ण-विषय सम्बन्धित कथाएँ मिलती हैं। इनकी कथाओं में जीवन का शायद ही कोई पक्ष वर्णित होने से बच पाया हो। इनकी कथाएँ अर्थ-बोध की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। ये कथाएँ कल्पना की ऊँची उड़ान नहीं भरती हैं बल्कि समय की श्रृंखला से बन्धी हुई कथाएँ हैं। साहित्यकार एक चिकित्सक की भाँति होता है जो मनुष्य की सामाजिक चेतना और सामाजिक चिन्ता को दर्पण दिखाता है जिससे मानव जीवन की वास्तविकता और सम्भावना की अभिव्यक्ति होती है। नारायण शास्त्री कांकर ने समय के पहिये को थामें अपनी कथाओं के माध्यम से समाज की उन विकृतियों का जमकर विरोध किया है जिनके कारण भ्रष्टाचार, पक्षपात, घरेलू हिंसा, स्त्री-शोषण, मानवीय सम्बन्धों की कुरुपता एवं अव्यवस्था रूपी अमरबेल फैल रही है।

इन्होंने स्त्री के जन्म पर प्रारम्भ से ही दुःख प्रकट करने वाले समाज की सोच को उजागर करते हुए 'उत्कोचः पतिव्रता पत्नी च' कथा के माध्यम से प्रश्न उठाया है, कि- "किं पुत्र-जननं तस्याः वशे आसीत् ? यदि पुत्र-जननं स्त्रियाः वशे भवेत् तर्हि सर्वाः स्त्रियः पुत्रान् एव किं न जनयेयुः ? स्त्रीः तु न कासाम् अपि जायरेन्। अत्र तस्याः कः एकलायाः दोषः ?"[7] इनकी 'पौरुष-परीक्षा' कथा में तारा पितृसत्तात्मक समाज के सामने घुटने नहीं टेकती है बल्कि प्रतिरोध का स्वर मुखर करती हुई सन्तान नहीं होने पर स्त्री को ही दोषी मानने वाले समाज को करारा तमाचा मारती है। 'नलिनी' और 'स्त्री-हृदयम्' कथाओं की नायिका भारतीय संस्कृति में लिपटी 'डोली पीहर से तथा अर्थी ससुराल से उठेगी' इस धारणा को शिरोधार्य मानकर जीवन निर्वाह करती है। 'पुनरावृत्तिः' तथा 'हृदय-परिवर्तनम्' कथाओं में प्रेम के बदलते स्वरुप को दिखाया गया है। 'गृह-स्वामिनी' व 'शावक-स्नेहः' में हाशिए पर रहने वाले दलित समाज को कथ्य का आधार बनाया गया है। जहाँ 'शावक-स्नेहः' में पुरातन संस्कारवश जातिगत भेदभाव को दिखाया गया है वहीं 'गृह-स्वामिनी' में जातिगत भेदभाव को दरकिनार करते हुए सवर्ण गृह-स्वामिनी द्वारा हरिजन की सहायता करके नवीन सामाजिक मूल्यों को

प्रतिष्ठापित किया गया है। बाल मनोविज्ञान को आधार बनाकर लिखी गई 'अवमानितः नरेन्द्रः', 'वराकी विमला', 'विमाता' आदि कथाओं में बाल-शोषण एवं बदलते मानवीय सम्बन्धों पर खुलकर बात की गई है। पारिवारिक विघटन एवं एकल परिवार के प्रति युवा पीढ़ी की सोच को 'मातुः शिक्षा' कथा के माध्यम से व्यक्त किया गया है। राजनीति एवं भ्रष्टाचार को आधार बनाकर लिखी कथाओं में 'यथा कर्म तथा फलम्', 'अकालः अपि सुकालः', 'परम-वीरः सैनिकः', 'दुर्दान्तः दस्युराजः' 'शशिमोहन हतभाग्यः', 'कर-चौर्यम्' आदि प्रमुख हैं।

शिवसागर त्रिपाठी के शब्दों में इनकी कथाएँ परम्पराभुक्त कम, परम्परामुक्त अधिक हैं। इनकी कथाओं में समाज, व्यक्ति, स्त्री, पुरुष, मर्यादा, संस्कृति, आदर्श, नैतिकता आदि भावों को स्पष्ट किया गया है। इनकी कथाओं का कथ्य समाज को प्रगतिशील पथ पर ले जाने का ठोस प्रयास है। इनकी कथाएँ कल्पना लोक में विचरण करने के स्थान पर यथार्थवादी लोक में रमती हैं। इनकी कथाओं से यह स्पष्ट है कि यह मानव मूल्य के प्रति सचेत रहने वाले व्यक्ति हैं। इनकी कथाएँ मानव मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। "सरल संस्कृत में लिखित और हिन्दी भाषा में अनूदित ये कथाएँ स्तरीय और महत्त्वपूर्ण हैं। सभी कथाओं के शीर्षक लघु, आकर्षक, रुचिकर और सम्बद्ध कथावस्तु के व्यञ्जक हैं। ये कथाएँ भाषिक संरचना और कलात्मक कला की दृष्टि से खरी और गम्भीर हैं। ये अलंकार और क्लिष्ट समाससन्धि से रहित हैं। इनमें से कतिपय राजस्थान अकादमी और दिल्ली संस्कृत अकादमी से पुरस्कृत हैं। आकाशवाणी के जयपुर केन्द्र से प्रायः सभी प्रसारित हुई हैं। कुछ विभिन्न कथा-संकलनों में सम्मिलित भी हुई हैं।"[8]

पद्म शास्त्री जी ने बालमनोविज्ञान आधारित नैतिक कथाओं के आधार पर अपनी कथाओं में हास्य रस, मनोविनोद, व्यङ्ग्य का पुट बिखेरा है। इनकी कथाओं में लौकिक भावभूमि के भी दर्शन होते हैं। कथाओं में दैवीकरण नहीं हैं न ही किसी गम्भीर मुद्दे को लेकर बात हुई है जो भी हलचल है वह मानवीय स्वभाव, नैतिकता, मानवता रूपी मूल्यों के इर्द-गिर्द होती है। इनकी कथाओं में सांस्कृतिक मूल्यबोध और संवेदन का तत्त्व मौजूद है।

नन्दकिशोर गौतम ने दहेज के कारण स्त्री जीवन की विडम्बना, विसंगतियों, पराधीनता आदि पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से विचार करके लिखा है। इनकी कथाएँ स्त्री को स्वयं को पहचानने के लिए प्रेरित करती है। ये कथाएँ दहेज को स्त्री का भाग्य मान लेना का पुरजोर विरोध करते हुए स्त्री अस्तित्व को प्रधानता देती हैं। इनकी कथाओं में स्त्री की परम्परागत छवि के साथ उसकी आधुनिक भूमिका का सन्तुलन देखा जाता है।

कलानाथ शास्त्री द्वारा भिन्न-भिन्न मनोभावों के आधार पर लिखी कथाओं में कहीं तो युवा मन के मनोरम भावों को मर्यादा के आंचल में समेटा हुआ है तो कहीं सामाजिक मूल्यों की त्रासदी को आधार बनाया गया है। इनकी कथाओं का संसार बेहद व्यापक है। इसमें प्रेम की गहराई है परन्तु सूझ-बूझ के साथ। मानवीय संवेदनाओं की सच्ची अनुभूति एवं यथार्थ वर्णन इनकी कथाओं का मूल बिन्दु है। इनकी कथाएँ विचार की निरन्तरता को बनाये रखती हैं। इनकी कथाएँ कल्पनालोक के व्यर्थ-विचरण से दूर रहकर धरातलीय बिन्दुओं को उठाती है। इन कथाओं के विषय में मञ्जुलता शर्मा कहती हैं कि "देवर्षि जी की समस्त कथाओं में विषयों की भिन्नता है। यथार्थ के धरातल पर लिखी ये कथाएँ अपनी प्रस्तुति की नवीनता के कारण रोचकता को बनाये रखने में समर्थ है। उन्होंने केवल समस्याओं को ही अपना वर्ण्य विषय नहीं बनाया है अपितु प्रेम के ताने-बाने को भी बुना है। परन्तु उनकी किसी भी कथा में मोहब्बत की दीवानगी नहीं है। वे सम्भवतः प्रेम को जीवन का अंग तो मानते हैं परन्तु प्रेम का पागलपन उन्हें स्वीकार नहीं। उनका विचार है कि - और भी गम है जमाने में मोहब्बत के सिवा। कहानियों के क्रम में अन्तिम कथा के रूप में 'निर्णयन्तु तु भवन्त एव' को रखा गया है सम्भवतः इसमें भी देवर्षि जी का यही दृष्टिकोण इंगित होता है, उन्होंने जिन समस्याओं को कथा चित्रों में उकेरा है उनके समाधान का निर्णय आपको स्वयं करना है। अब आप जानो, आपका काम जाने हम तो इशारा कर चुके। यह है अभिव्यक्ति का नया आयाम जिसकी प्रस्तुति में लेखक ने पूरा न्याय किया है।"[9]

प्रभाकर शास्त्री का कथा लेखन सीमित जरूर है परन्तु गम्भीर और सारगर्भित है। इनकी कथा के वर्ण्य-विषय युगानुरूप है। वर्तमान परिस्थितियों,

स्थितियों तथा संवेदनाओं को एकत्रित कर कथा विषय का चयन किया गया है। परम्परा से चली आ रही धारणाओं पर नवीन ढंग से विचार किया गया है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में प्रचलित विभिन्न अव्यवस्थाओं, समस्याओं एवं सामाजिक विद्रूपताओं पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया गया है।

राजेश्वरी भट्ट ने घरेलू हिंसा, बाल मनोविज्ञान, नशे की समस्या आदि पर सरलतम रूप में विचार किया है। किसी भी लेखक की उपलब्धि कथा की संख्या पर निर्भर नहीं करती है बल्कि प्रसिद्धि के लिए एक कथा ही काफी होती है।

राकेश शास्त्री का 'संस्कृत कथा मंजरी' कथा संग्रह आधुनिक परिवेश एवं भाव-बोध को आधार बनाकर लिखा गया है। 'सहयोग:' कथा में जातिगत भेदभाव को दरकिनार करते हुए दलित बालक की प्रतिभा को आपसी सहयोग से निखारा गया है। 'कर्मफलम्' कथा में भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों पर विचार-विमर्श किया गया है। नवीन मूल्यों की संकल्पना पर आधारित 'मन्दभागी क:', 'मार्गदर्शनम्', 'आत्मविश्वास:' व 'संकल्प:' कथाएँ लिखी गई हैं। अन्तर्जातीय विवाह को आधार बनाकर 'संघर्ष:' कथा लिखी गई है।

राजस्थान की संस्कृत कथाओं में मनुष्य जीवन के तनाव, घृणा, ईर्ष्या, संत्रास, भय, कटुता आदि को भी दिखाया गया है जो प्रतिस्पर्धा वाले युग में बड़े स्तर पर दृष्टिगोचर होती है। इन प्रवृत्तियों के अतिरिक्त जीवन संघर्ष, चेतना, आत्मसजगता आदि प्रवृत्तियाँ प्रमुखता से उभर कर आयी है। आधुनिक कथाओं में समकालीन समाज में आये परिवर्तनों के कारण व्यक्ति की सोच में आये बदलाव को यथार्थपूर्ण दृष्टि से दिखाया है। "वस्तुत संस्कृत एक भाषा भी है और धरोहर भी इसलिए संस्कृत साहित्य के रचनाकारों का दायित्व और भी बढ़ जाता है। उनकी अभिव्यक्ति, आधुनिक समस्याओं के साथ-साथ पारम्परिक साहित्य को भी सुरक्षित रखने का संकल्प लेकर चलती है। यद्यपि कुछ साहित्यकार आंचलिकता को संस्कृत में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु उनकी अनुभूति प्रवणता का स्थान विवरण बहुलता से ले रही है। परन्तु फिर भी संस्कृत लेखन की दिशा, कथ्य एवं शिल्प दोनों की ही दृष्टि से युगानुरूप चल रही है। काव्य, पौराणिक कथाएँ, स्तोत्र साहित्य, भक्ति साहित्य आदि पर ही सब कुछ यथावत नहीं लिखा जा रहा है। अपितु नये परिप्रेक्ष्य में नवीन विषय वस्तु पर भी लेखन हो रहा है। समसामयिक राजनीति पर संस्कृत सर्जक की पैनी दृष्टि लगी हुई है। वह केवल राष्ट्रीय आन्दोलन अथवा देशप्रेम की ही बात नहीं कर रहा अपितु राजनीति की वर्तमान विसंगतियों पर भी क्रूर कटाक्ष करने को कटिबद्ध है। राजनेताओं के गिरते चरित्र और पतित होते मूल्यों ने संस्कृत साहित्य को भी प्रभावित किया है।"[10]

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची :

1. कमलेश्वर : 'कथा संस्कृति : वैश्विक परिदृश्य', हिन्दी समय (कमलेश्वर).
2. मञ्जुलता शर्मा : आधुनिक संस्कृत साहित्य के नए भवबोध, संस्कृत ग्रन्थागार, दिल्ली, 2010, पृष्ठ-95.
3. सुनीता शर्मा : आधुनिक संस्कृत साहित्य एवं भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, रचना प्रकाशन, जयपुर, 2008, पृष्ठ-65.
4. राधावल्लभ त्रिपाठी : संस्कृत साहित्य : बीसवीं शताब्दी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जनकपुरी, दिल्ली, 1999, पृष्ठ-80.
5. पुष्करदत्त शर्मा : संस्कृत साहित्य का इतिहास, अजमेरा बुक कंपनी, जयपुर, 1999, पृष्ठ-213.
6. रामदेव साहू : 'विद्याभूषण पं. गणेशरामशर्ममहाभागानां संस्कृतगद्यलेखनम्', राजस्थानीयमभिनवसंस्कृत साहित्यम् पञ्चम: खण्ड: (गंगाधर भट्ट), राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण, 2014, पृष्ठ-41.
7. नारायण शास्त्री कांकर : अभिनव-संस्कृत-कथा, विद्या वैभव भवन, जयपुर, 1987, पृष्ठ-31.
8. शिवसागर त्रिपाठी : कथाषोडशी, मातृशरणम् प्रकाशन, जयपुर, भूमिका से.
9. मञ्जुलता शर्मा : आधुनिक संस्कृत साहित्य के नये भावबोध, पृष्ठ-58.
10. मञ्जुलता शर्मा : 'अर्वाचीन संस्कृत-साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ', अर्वाचीन संस्कृत साहित्य दशा एवं दिशा (मञ्जुलता शर्मा व प्रमोद भारतीय), परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2004, पृष्ठ-84.

.